UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

JRF का जलवा

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान का विशिष्ट अध्ययन

UNIT= 6

Daily = 6 pm

Class = 95

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d purshuing

UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
PYQ with Ans
100+ Mock Test
fillerform

UGC NET 2022
Free 100+
Mock Test
fillerform

8209837844
www.ugc-net.com
NET Free Class
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
07:00 PM - Short video(notes)
08:00 PM- Job/PhD update
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

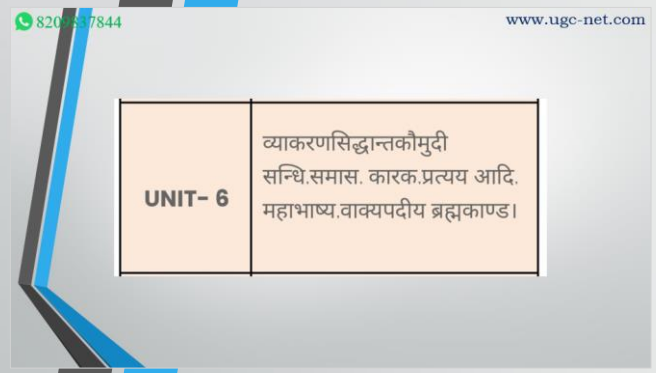
8209837844
www.ugc-net.com
UNIT- 6
व्याकरणसिद्धान्तकौमुदी
सन्धि,समास, कारक,प्रत्यय आदि,
महाभाष्य,वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड।

8209837844
www.ugc-net.com
We want JRF
JRF का जलवा
We want JRF

UGC NET Giveaway
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

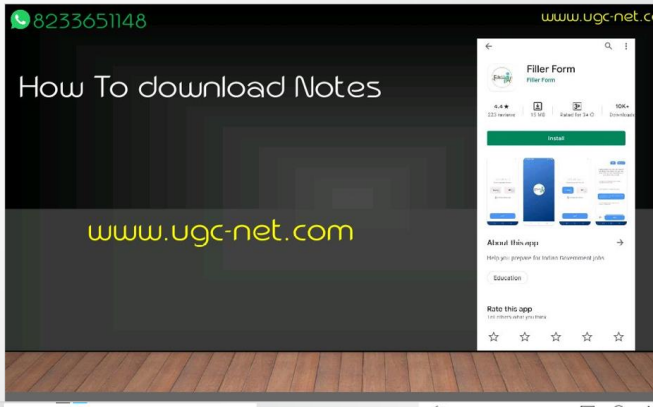
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

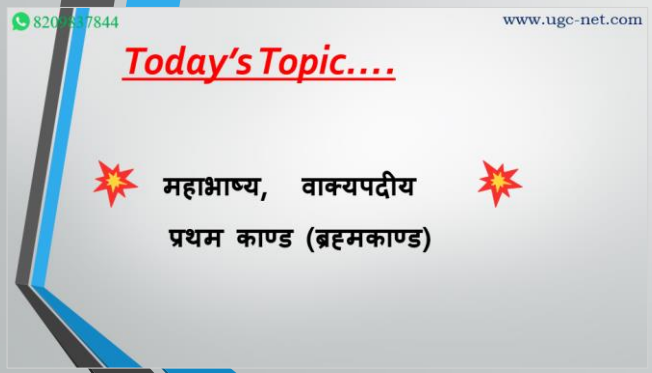
8209837844
www.ugc-net.com
Today's Topic....
महाभाष्य, वाक्यपदीय
प्रथम काण्ड (ब्रह्मकाण्ड)

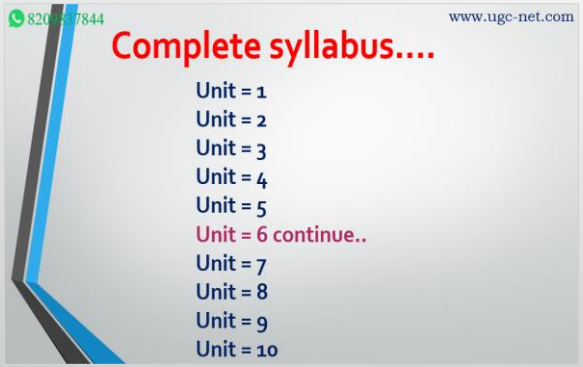
8209837844
www.ugc-net.com
Complete syllabus....
Unit = 1
Unit = 2
Unit = 3
Unit = 4
Unit = 5
Unit = 6 continue..
Unit = 7
Unit = 8
Unit = 9
Unit = 10

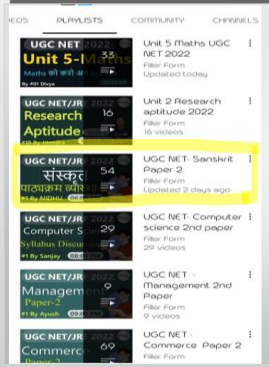
PLAYLISTS
COMMUNITY
CHANNELS
Unit 5 Maths UGC NET 2022
Unit 2 Research aptitude 2022
UGC NET- Sanskrit Paper 2
UGC NET- Computer science 2nd paper
UGC NET - Management 2nd Paper
UGC NET - Commerce Paper 2

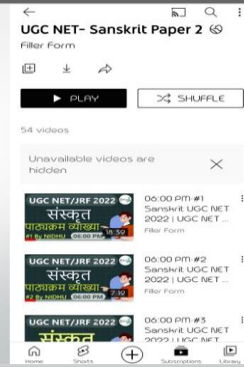
UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
PLAY
SHUFFLE
54 videos
Unavailable videos are hidden

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

Sanskrit UGC NET - Fil...
272 subscribers

29 Jitendra GOSWAMI, 9:04 AM

Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...

Quiz will start , 15 May 😀
22 Jitendra GOSWAMI, 10:17 AM

Sanskrit UGC NET - Fillerform
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books 📚

Paper 1st hindi / English

DOWNLOAD now
👇👇👇
https://bit.ly/30KQLNr
8 Jitendra GOSWAMI, 3:44 PM

Broadcast

SANSKRIT BY NIDHU
25 members

MJ

2:42 PM

Fillar From
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books 📚

Paper 1st hindi / English

DOWNLOAD now
👇👇👇
https://bit.ly/30KQLNr
344 Jitendra GOSWAMI, 3:44 PM

Maya Jatwa
Photo
Very good 👍 4:59 PM

Message

UGC NET 100%

Off Free Class

Free Notes

PYQ with Ans

100+ Mock Test

fillerform

UGC NET 2022

Free 100+

Mock Test

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

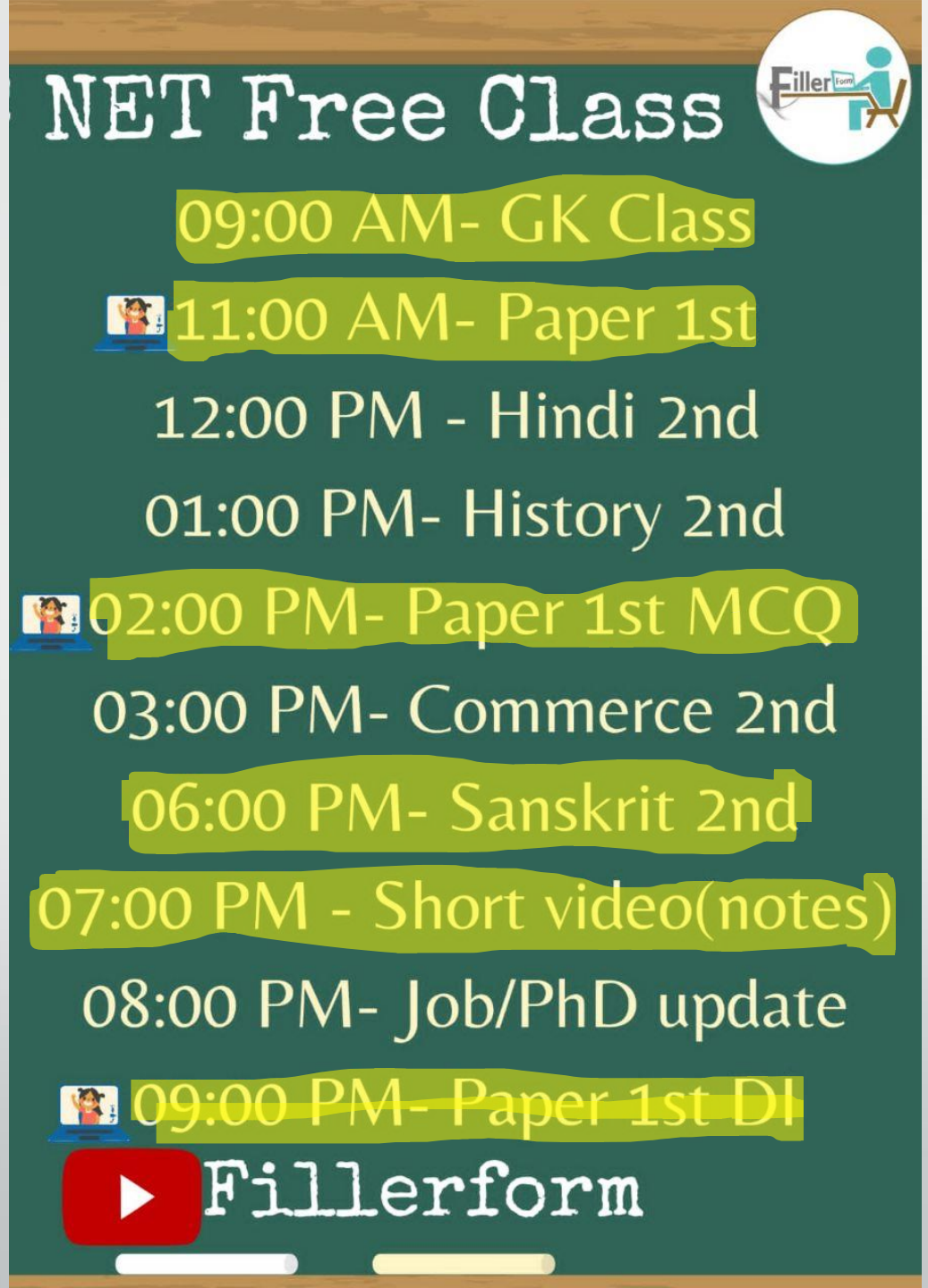

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

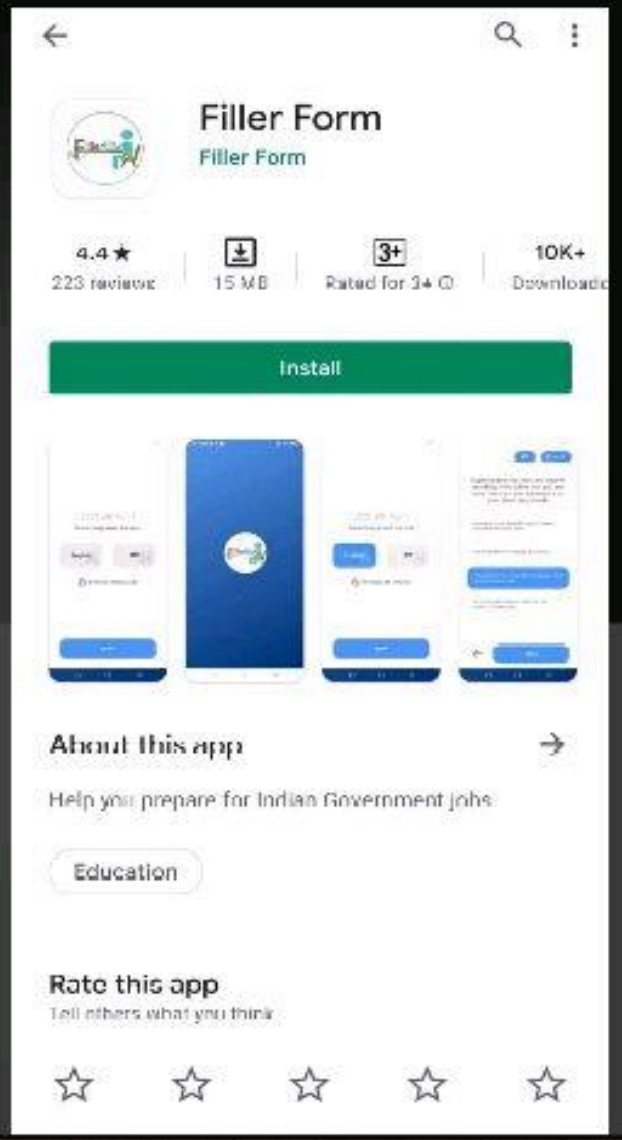

EOS PLAYLISTS COMMUNITY CHANNELS

Unit 5 Maths UGC NET 2022
Filler Form
Updated today

Unit 2 Research aptitude 2022
Filler Form
16 videos

UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
Updated 2 days ago

UGC NET- Computer science 2nd paper
Filler Form
29 videos

UGC NET - Management 2nd Paper
Filler Form
9 videos

UGC NET - Commerce Paper 2
Filler Form

UGC NET- Sanskrit Paper 2

Filler Form

PLAY SHUFFLE

54 videos

Unavailable videos are hidden

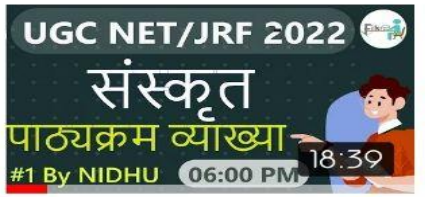

06:00 PM-#1 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

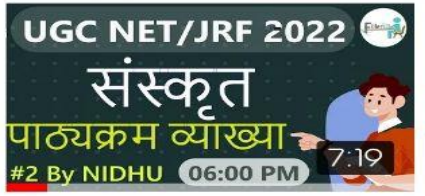

06:00 PM-#2 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

06:00 PM-#3 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET

Home Shorts Subscriptions Library

UGC NET Giveaway

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

We want JRF

We want JRF

8209837844

www.ugc-net.com

Complete syllabus....

Unit = 1

Unit = 2

Unit = 3

Unit = 4

Unit = 5

Unit = 6 continue..

Unit = 7

Unit = 8

Unit = 9

Unit = 10

8209837844

www.ugc-net.com

UNIT– 6	व्याकरणसिद्धान्तकौमुदी सन्धि,समास, कारक,प्रत्यय आदि, महाभाष्य,वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड।

8209837844

www.ugc-net.com

Today's Topic....

- महाभाष्य, वाक्यपदीय

प्रथम काण्ड (ब्रह्मकाण्ड)

8209837844
www.ugc-net.com

* महाभाष्य किसका ग्रंथ है?

= पतंजलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी के कुछ चुने हुए सूत्रों पर भाष्य लिखी जिसे व्याकरणमहाभाष्य का नाम दिया

(महा+भाष्य (समीक्षा, टिप्पणी, विवेचना, आलोचना

8209837844
www.ugc-net.com

* महाभाष्य की रचना किसने और कहाँ की थी?

महाभाष्य की रचना पतंजलि ने की जो पुष्यमित्र शुंग के गुरु और पुरोहित थे।

8209837844
www.ugc-net.com

* महाभाष्य कब लिखा गया था?

= यह दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है।

महाभाष्यकार "पतंजलि" का समय असंदिग्ध रूप में ज्ञात है। पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में पतंजलि वर्तमान थे।

महाभाष्य के निश्चित साक्ष्य के आधार पर विजयोपरांत पुष्यमित्र के श्रौत (अश्वमेध यज्ञ) में संभवतः पतंजलि पुरोहित थे।

8209837844
www.ugc-net.com

यह (इह पुष्यमित्रं याजयाम:) महाभाष्य से सिद्ध है। साकेत और माध्यमिका पर यवनों के आक्रमणकाल में पतंजलि विद्यमान थे।

अत: महाभाष्य और महाभाष्यकार पतंजलि - दोनों का समय ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी निश्चित है।

द्वितीय शताब्दी ई.पू. में मौर्यों के ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग - मौर्य वंशी बृहद्रथ को मारकार गद्दी पर बैठे थे।

नाना पंडितों के विचार से 200 ई.पू. से लेकार 140 ई.पू. तक महाभाष्य की रचना का मान्य काल है।

8209837844
www.ugc-net.com

* महाभाष्य में कितने अहणिका होते हैं?

तीसरे अध्याय के पहले खंड को कवर करने वाले भाष्य के छह अहनिकों का अनुवाद पाठ के लिए अधिक शाब्दिक और वफादार है।

डॉ. थॉम्पसन ने महत्वपूर्ण नोट्स जोड़े हैं जो पाठ और उसके संदर्भ को समझने के लिए बहुत उपयोगी हैं।

* महर्षि पतंजलि का प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन सा है?

भारतीय साहित्य में पतंजलि द्वारा रचित ३ मुख्य ग्रन्थ मिलते हैं।

योगसूत्र, अष्टाध्यायी पर भाष्य और आयुर्वेद पर ग्रन्थ। कुछ विद्वानों का मत है कि ये तीनों ग्रन्थ एक ही व्यक्ति ने लिखे, अन्य की धारणा है कि ये विभिन्न व्यक्तियों की कृतियाँ हैं।

8209837844
www.ugc-net.com

* महाभाष्य

पतंजलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी के कुछ चुने हुए सूत्रों पर भाष्य लिखी जिसे व्याकरणमहाभाष्य का नाम दिया (महा+भाष्य (समीक्षा, टिप्पणी, विवेचना, आलोचना))।

व्याकरण महाभाष्य में कात्यायन वार्तिक भी सम्मिलित हैं जो पाणिनि के अष्टाध्यायी पर कात्यायन के भाष्य हैं।

कात्यायन के वार्तिक कुल लगभग 1400 हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते बल्कि केवल व्याकरणमहाभाष्य में पतञ्जलि द्वारा सन्दर्भ के रूप में ही उपलब्ध हैं।

इसकी रचना लगभग ईसापूर्व दूसरी शताब्दी में हुई थी।

8209837844
www.ugc-net.com

संस्कृत के तीन महान वैयाकरणों में पतंजलि भी हैं। अन्य दो हैं - पाणिनि तथा कात्यायन (140 ईशा पूर्व)।

महाभाष्य में शिक्षा (phonology, including accent), व्याकरण (grammar and morphology) और निरुक्त (etymology) - तीनों की चर्चा हुई है।

8209837844
www.ugc-net.com

इसकी रचना ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी की मानी जाती है।
महाभाष्यकार "पतंजलि" का समय असंदिग्ध रूप में ज्ञात है।

पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में पतंजलि वर्तमान थे।

महाभाष्य के निश्चित साक्ष्य के आधार पर विजयोपरांत पुष्यमित्र के श्रौत (अश्वमेध यज्ञ) में संभवतः पतंजलि पुरोहित थे।

यह (इह पुष्यमित्रं याजयाम:) महाभाष्य से सिद्ध है।

साकेत और माध्यमिका पर यवनों के आक्रमणकाल में पतंजलि विद्यमान थे।

8209837844
www.ugc-net.com

अत: महाभाष्य और महाभाष्यकार पतंजलि - दोनों का समय ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी निश्चित है।

द्वितीय शताब्दी ई.पू. में मौर्यों के ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग - मौर्य वंशी बृहद्रथ को मारकार गद्दी पर बैठे थे।

नाना पंडितों के विचार से 200 ई.पू. से लेकार 140 ई.पू. तक महाभाष्य की रचना का मान्य काल है।

महाभाष्य की महत्ता के अनेक कारण हैं। प्रथम हेतु है उसकी पांडित्यपूर्ण विशिष्ट व्याख्याशैली।

विवादास्पद स्थलों का पूर्वपक्ष उपस्थित करने के बाद उत्तरपक्ष उपस्थित किया है।

शास्त्रार्थ प्रक्रिया में पूर्व और उत्तर पक्षों का व्यवहार चला आ रहा है। इसके अतिरिक्त आवश्यक होने पर उस पक्ष का भी उपन्यास किया है। विषयप्रतिपादन दूसरी विशेषता है।

महाभाष्य की व्याख्या का क्रम तो अष्टाध्यायी और तदंतर्गत चार पादों और उनके सूत्रों का क्रम है।

पर भाष्य के अपने क्रम में व्याख्या का नियोजन विभक्त है, जिसका अर्थ यह भी होता है कि एक "महाभाष्य" लिखा जाता रहा।

"पतंजलि" ने अपने महाभाष्य में व्याकरण की दार्शनिक शब्दनित्यत्ववाद या स्फोटबाद अथवा शब्दब्रह्मवाद का किया है। इस सिद्धांत को भर्तृहरि ने विस्तार के से वाक्यपदीय में पल्लवित किया है।

महाभाष्य की महत्ता का यह कारण है। साहित्यिक दृष्टि से महाभाष्य का गद्य अत्यन्त अकृत्रिम, मुहावरेदार, धाराप्रावाहिक और स्पष्टार्थबोध है।

भर्तृहरि ने इसपर टीका लिखी थी पर उसका अधिकांश अनुपलब्ध है।

केय्यट की "प्रदीप" नामक टीका और नागोज उद्योत नाम से "प्रदीपटीका" प्रकाशित है।

संस्कृत व्याकरण में "मुनित्रय" को बहुत ही उच्च और प्रामाणिक पद दिया गया है।

अष्टाध्यायी-कार पाणिनि, वार्त्तिककार कात्यायन और महाभाष्यकार पतंजलि - इन्हीं तीनों को "मुनित्रय" कहा गया है।

व्याकरणशास्त्र के इतिहास में पाणिनीय व्याकरण की शाखा के अतिरिक्त पूर्व और परवर्ती अनेक व्याकरण शाखाएँ रही हैं।

परंतु "मुनित्रय" से पोषित और समर्थित व्याकरण की पाणिनीय शाखा को जो प्रसिद्धि, मान्यता और लोकप्रियता प्राप्त हुई वह अन्य शाखाओं को नहीं मिल सकी - जिसका कारण महाभाष्य ही माना गया है।

8209837844
www.ugc-net.com

अष्टाध्यायी पर "कात्यायन" ने वार्त्तिकों की रचना द्वारा व्याकरणसिद्धांतों को अधिक पूर्ण और स्पष्ट बनाया।

"पतंजलि" ने मुख्यत: वार्त्तिकों की व्याख्या को महाभाष्य द्वारा आगे बढ़ाया।

अनेक स्थलों पर उन्होंने कात्यायनमत का प्रत्याख्यान और पाणिनिमत की मान्यता भी सिद्ध की है।

कभी-कभी उन सूत्रों की भी विवेचना की है जो कात्यायन ने छोड़ दिए थे।

इस महाभाष्य की रचनापीठिका का निर्देश करते हुए वाक्यपदीयकार "भर्तृहरि" ने बताया है कि जब व्याकरण के पाठक संक्षेपरुचि और अल्पविद्यापरिग्रह बन गए, "संग्रह" ग्रंथ (जिसके कर्ता परंपरा के अनुसार व्याडि हैं) अस्त हो गया तब तीर्थदर्शी गुरु पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की, जिसमें सभी न्यायबीजों का भी निबंधन है।

इससे पता चलता है कि "पतंजलि" के पूर्व "संग्रह" नामक ग्रंथ में व्याकरण संबद्ध विवेचन अत्यंत विस्तृत था। "संग्रह" नामक ग्रंथ में एक लाख श्लोक होने का उल्लेख महाभाष्य तथा प्रदीप की टीका 'उद्योत' में नागेश भट्ट ने किया है।

8209837844
www.ugc-net.com

* वाक्यपदीय, प्रथम काण्ड (ब्रह्मकाण्ड)

वाक्यपदीय, संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसे त्रिकाण्डी भी कहते हैं। वाक्यपदीय, व्याकरण शृंखला का मुख्य दार्शनिक ग्रन्थ है।

इसके रचयिता नीतिशतक के रचयिता महावैयाकरण तथा योगिराज भर्तृहरि हैं। इनके गुरु का नाम वसुरात था।

भर्तृहरि को किसी ने तीसरी, किसी ने चौथी तथा छठी या सातवी सदी में रखा है।

8209837844
www.ugc-net.com

वाक्यपदीय में भर्तृहरि ने भाषा (वाच्) की प्रकृति और उसका वाह्य जगत से सम्बन्ध पर अपने विचार व्यक्त किये हैं।

यह ग्रंथ तीन भागों में विभक्त है जिन्हें "कांड" कहते हैं।

यह समस्त ग्रंथ पद्य में लिखा गया है।

प्रथम "ब्रह्मकांड" है जिसमें 157 कारिकाएँ हैं,

दूसरा "वाक्यकांड है जिसमें 493 कारिकाएँ हैं और

तीसरा "पदकांड" के नाम से प्रसिद्ध है।

इसका प्रथम काण्ड ब्रह्मकाण्ड है जिसमें शब्द की प्रकृति की व्याख्या की गयी है। इसमें शब्द को ब्रह्म माना गया है और ब्रह्म की प्राप्ति के लिये शब्द को प्रमुख साधन बताया गया है।

दूसरे काण्ड में वाक्य के विषय में भर्तृहरि ने विभिन्न मत रखे हैं।

तीसरे काण्ड में अन्य दार्शनिक रीतियों के विषयों, जैसे - जाति, द्रव्य, काल आदि की चर्चा की गयी है। इसमें भर्तृहरि यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि विविध मत, एक ही वस्तु के अलग-अलग आयामों को प्रकाशित करते हैं। इस प्रकार वे सभी दर्शनों को अपने व्याकरण आधारित दर्शन द्वारा एकीकरण करने का प्रयास कर रहे हैं।

8209837844
www.ugc-net.com

मूल में व्याकरण शास्त्र एक प्रकार से आगम शास्त्र है। इसकी अभिव्यक्ति महेश्वर से है।

आगम के अनुसार शब्द के चार स्वरूप हैं - "परा", "पश्यंती", "मध्यमा" तथा "वैखरी"। इनमें "परा" ही ब्रह्म है।

इसीलिए वाक्यपदीय की प्रथम कारिका में ही शब्दतत्व को अनादि और अनंत तथा अक्षर ब्रह्म कहा है।

इसी परारूप ब्रह्म से संसार के पदार्थों की उत्पत्ति तथा व्यवहार विवर्तरूप में माना गया है।

प्रथम कांड में, शब्दतत्व के दार्शनिक रूप का विचार है, अतएव इसे "ब्रह्मकांड" नाम दिया गया है और साधारण रूप में इसका वाचकत्व सिद्ध किया गया है।

वस्तुत: यह आगमिक कांड है। आगम की दृष्टि से लिखा गया है।

इस कांड की कुछ उपयोगी तथा जानने योग्य बातें ये हैं-

उस ब्रह्म की प्राप्ति के उपाय तथा स्वरूप को महर्षियों ने "वेद" कहा है। यह एक होता हुआ भी अनेक मालूम होता है।

इसीलिए ऋक् यजुष्, साम तथा अथर्वन् नाम से चार वेद कहे जाते हैं। ऋग्वेद की 21, यजुर्वेद की 100, सामवेद की 1000 तथा अथर्ववेद की 9 मिलाकर 1130 शाखाएँ वेद की हुई। ऐसा होने पर भी सभी वेदों तथा उनकी शाखाओं का एकमात्र प्रतिपाद्य विषय "कर्म" है।

यह स्मरण रखना है कि जो शब्द या मंत्र जिस स्वर में जिस शाखा में पढ़ा गया है वह शब्द उसी तरह उच्चारण किए जाने पर फल देनेवाला होता है।

वही शब्द उसी रूप में दूसरी शाखा में पढ़े जाने से इस शब्दोच्चारण का फल होगा अन्यथा नहीं, अथवा अन्य कोई फल देगा।

8209837844
www.ugc-net.com

आगम के बिना कर्तव्य एवं अकर्तव्य का निश्चय नहीं हो सकता। ऋषियों में जो अतींद्रिय वस्तु को देखने का ज्ञान है वह भी आगम ही के द्वारा प्राप्त है (वाक्य. 1.37)।

तर्क के द्वारा कोई यथार्थ ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता, वह परिवर्तनशील है। ऊँचे स्तर के ऋषियों के लिए भूत और भविष्य सभी प्रत्यक्ष हैं।

ज्ञान के स्वप्रकाश होने के कारण उसमें आत्मा का स्वरूप तथा घट आदि ज्ञेय पदार्थ का स्वरूप दोनों भासित होते हैं। उसी प्रकार शब्द में अर्थ का स्वरूप और उसका अपना स्वरूप, दोनों की प्रतीति होती है।

जिस प्रकार जयापुष्प के के लाल रूप से संबद्ध ही स्फटिक का ग्रहण होता है उसी प्रकार स्फोट से मिली हुई ध्वनि का ही ग्रहण होता है।

किसी का मत है कि जिस प्रकार इंद्रियों का गुण असंवेद्य होकर भी विषयों के ज्ञान का कारण है, उसी प्रकार ध्वनि असंवेद्य होती हुई भी शब्द के ज्ञान का कारण होती है।

दूसरा मत है कि "दूरत्व" दोष के कारण स्फोट के स्वरूप का ज्ञान नहीं होता, केवल ध्वनि का ही भान होता है।

तीसरा मत है कि स्फोट का भान तो होता है परंतु दूरत्व दोष के कारण अस्फुट रहता है, जैसे दूर होने के कारण किसी वस्तु का "परिमाण" स्पष्ट रूप में भासित नहीं होता।

8209837844
www.ugc-net.com

अणुओं में सभी प्रकार की शक्तियाँ हैं, इसीलिए भेद और संसर्ग (वियोग तथा संयोग) रूप में अणुओं से (संसार के सभी) कार्य होते हैं। ये अणु छाया, आतप, तमस् तथा शब्द के रूप में परिणत होते रहते हैं। ये शक्तियाँ अभिव्यक्त होने के समय में बड़े प्रयत्न से प्रेरित की जाती हैं। और जिस प्रकार (जल के परमाणुओं के क्रमश: इकट्ठे होने से) बादल बनते हैं उसी प्रकार शब्द के परमाणु क्रमश: इकट्ठे होकर सभी कार्य करते हैं। इन परमाणुओं का नाम "शब्द" या "शब्दपरमाणु" है।

इस प्रकार शब्द के आगमिक स्वरूप का विवेचन तथा शब्द ही से समस्त जगत् की सृष्टि का निरूपण ब्रह्मकांड में है।

8209837844
www.ugc-net.com

* टीकाएँ

वाक्यपदीय पर भूतिराज के पुत्र हेलाराज ने बहुत सुंदर तथा विस्तृत टीका लिखी है।

आधुनिक समय में भी कुछ विद्वानों ने टीका लिखी है किंतु इन सबकी दृष्टि आगमिक न होने के कारण वाक्यपदीय का वास्तविक ज्ञान नहीं प्राप्त होता।

इसकी बहुत सी कारिकाएँ नष्ट हुई मालूम होती हैं।

युधिष्ठिर मीमांसक तथा साधूराम ने लुप्त कारिकाओं पर कुछ विचार किए हैं। व्याकरण के आगमिक रूप के विचार में इस ग्रंथ के समान अन्य ग्रंथ बहुत नहीं हैं।

Next class….

Questions sollution

WE WANT
YOUR
FEEDBACK

LIKE
& SHARE

For More Information….

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

//Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

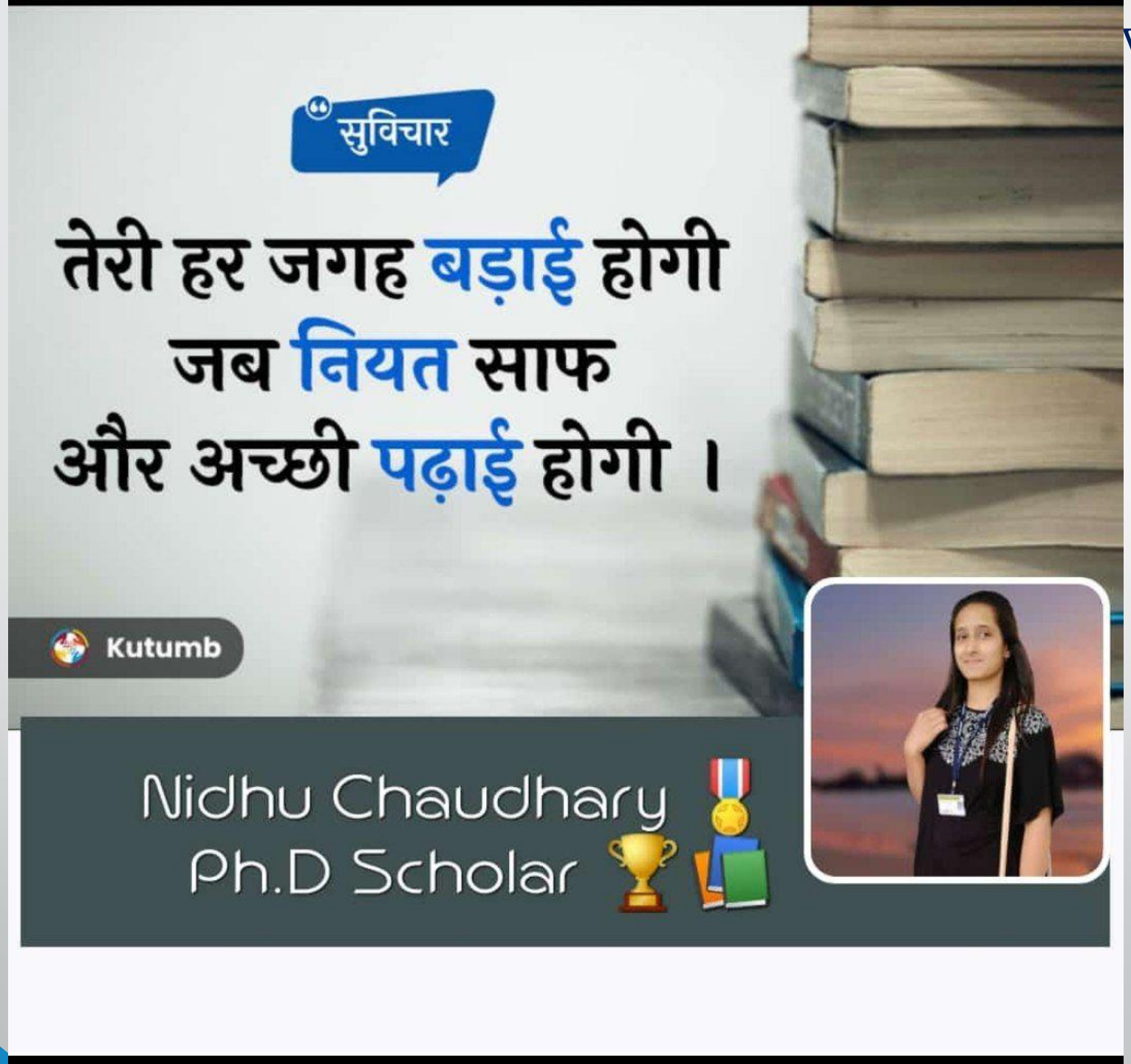

thank
you